हरेक का भाग्य है अपना
जो जितना करता उतना ही उसको मिलता
है यह कर्म की विडम्बना जो समझे वो ही जीता
कलम से अपने ही वो भाग्य की लकीर खींचता
यही गीता बाबा हमको संगम पर आकर सम्मुख सुनाता
राइट रांग की सही पहचान है वो देता
जिसके बुद्धि मे जितना समाता वो उतना ही पद पाता
पाप पुण्य का खाता ही आत्मा के संग है जाता
*** कर्म की गुह्य गति को जो है समझता वो ही अष्ट रत्नो मे गाया जाता**
कल्प -कल्प का भाग्य देने प्रभु संगम पर है पढ़ाने आता
समय संकल्प बोल कर्म जो है बचाता वो ही स्वराज्य को है पाता
दिलाराम के मस्तक पर मणि बन विश्व को है दर्शाता

ॐ शांति**
शिव बाबा**